IJAER/ Oct-Nov 2012 /Volume-1/Issue-3/Article No-23/ 311-314 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

नारी जीवन से सम्बन्धित विविध समस्यायें-एक दृष्टिकोण

डॉ० प्रवेश सोती
शोध निर्देशक
हिन्दी विभाग
सी०एम०जे० विश्वविद्यालय
राय-भोई, जोरबाट ,मेघालय।

सुजीत कुमार शर्मा
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
सी०एम०जे०विश्वविद्यालय
राय-भोई, जोरबाट , मेघालय।

भारतीय समाज सदैव पुरुष प्रधान रहा है। वैदिक-काल में नारी को पुरुषों के समान जीने का अधिकार प्राप्त था। उनका मान-सम्मान था, परन्तु कालान्तर में पुरुषों का वर्चस्व बढ़ता गया और नारी की स्थिति में क्रमशः ह्रास होता गया। मध्य-काल तक आते-आते स्त्रियों की स्थिति शोचनीय हो गयी। उनके जीवन को अनेक समस्याओं ने जकड़ लिया। इसका कारण सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति में जो परिवर्तन हुए, उसके कारण अनेक समस्यायें उत्पन्न हुयीं और शनैः-शनैः वह सामाजिक रीति-रिवाज व परम्पराओं में ढल गयीं।

प्राचीन काल से लेकर मध्य-काल तक बहुपत्नीत्व समाज की एक मान्यता बन चुकी थी। शासक वर्ग में तो अनेक पत्नियाँ रखने की होड़ लगी रहती थी। उनकी देखा-देखी सर्वसाधारण में बहु-विवाह की प्रथा चालू हो गयी थी। इतना ही नहीं, इसे धर्मिक व नैतिक बल भी प्राप्त हो गया था। युद्धों की अधिकता से पुरुषों की कमी भी इसका एक कारण होता रहा होगा। कारण नारी की सुरक्षा एवं संरक्षण की आवश्यकता के कारण भी एक-एक पुरुष कई-कई स्त्रियों से विवाह कर उनको सामाजिक सुरक्षा प्रदान करता था। प्रस्तुत अध्याय में नारी जीवन से जुड़ी विविध समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की जायेगी। इन समस्याओं में कई वैयक्तिक समस्यायें तथा कई समाज की देन हैं।

बहु-विवाह प्रथा भारतीय समाज का एक अंग थी। विवाहिता पत्नी तो कई-कई होती ही थीं, उपपत्नियाँ रखने का आम चलन था। शासक वर्ग और उनके अधीनस्थ सामन्त जमींदार सभी अनेक पत्नियाँ रखते थे। महाभारत काल में भी बहु-विवाह प्रथा थी। देवकी उपन्यास के अनुसार मगध नरेश जरासंध ने अपनी दोनों पुत्रियों अस्ति और प्राप्ति का विवाह यादव गण-संघ के शासक मथुरा नरेश कंस से कर दिया था। उसका वर्णन इस प्रकार मिलता है- 'यह तो संयोग की ही बात थी कि कंस का अंतःपुर अनेक राज्यों की कन्याओं से भरा हुआ था और उनके अतिरिक्त न जाने कितनी और भी रानियाँ थीं, तो भी कंस को उन अनगिनत भार्याओं ने एक भी पुत्र को जन्म नहीं दिया था। यदि ऐसा होता भी तो कंस उसे जीवित न रखता।'

'देवकी' उपन्यास में ही एक अन्य स्थान पर वर्णित है कि भीष्म अपने अनुज के साथ विवाह करने के लिए काशी नरेश की तीनों कन्याओं का स्वयंवर भूमि से हरण कर लाये थे और उनमें से दो अम्बिका और अम्बालिका का विवाह विचित्रवीर्य से कर दिया गया था, परन्तु अम्बा ने इस प्रकार बलपूर्वक लाकर विवाह करने के लिए असहमति प्रकट की थी।उस काल में स्वयंवर भूमि से हरण कर विवाह करने के अनेक उदाहरण मिलते हैं। कृष्ण ने रुकमणी का हरण किया था।

सत्यवती उपन्यास में वर्णित है- 'अब तो युग का स्वरूप ही कुछ और हो चला था। तीव्र गति से सम्बन्ध बदलने लगे थे। अब विवाह के योग्य कन्याएं एक ओर तो युद्ध का कारण बनने लगीं, दूसरी ओर परस्पर विवाह सम्बन्ध बनाकर एक-दूसरे राज्य को निकट लाने और संगठित करने का साधन थी।' हस्तिनापुर नरेश पाण्डु के कुन्ती एवं माद्री दो पत्नियाँ थीं। एक स्थान पर वर्णन मिलता है- 'कुन्ती के अतिरिक्त पाण्डु के एक और भी रानी थी माद्री। माद्री मद्र देश के राजा की बहन थी। उन दिनों राजाओं में कई विवाह करने की प्रथा थी। जिस राजा के भवन में जितनी अधिक रानियाँ होती थीं, वह उतना ही अधिक प्रतिष्ठित और शूरवीर समझा जाता था।'

मध्य काल के ऐतिहासिक नारी पात्रों को लेकर जो उपन्यास लिखे गये हैं, उनमें शासकों की विलासिता, अन्तःपुरों में रानियों की भरमार, हरम में बेगमों की संख्या आदि का वर्णन कथा-प्रवाह के मध्य मिलता है। 'नूरजहाँ' उपन्यास में जहाँगीर के हरम के विस्तार का

वर्णन मिलता है। जहाँगीर ने सिंहासन प्राप्त करते ही अपनी पूर्व प्रेमिका मेहेर के पति शेर अपफगान को मारकर मेहेर को प्राप्त किया और उसे नूरजहाँ का खिताब दिया। उसकी प्रधान बेगम भी उसका आदर सत्कार करती थी क्योंकि वह बादशाह की अतिशय प्रिय बेगम थी।

'मलिका जमानिया' उपन्यास में अवध के नवाबों की विलासप्रियता एवं हरम के विस्तार की चर्चा मिलती है- 'गाजीउद्दीन हैदर एय्याश बादशाह था। उसके जमाने में लखनऊ की छोटी-छोटी गलियाँ मीना बाजार बन गई थीं। नवाब की ऐय्याशी की धूम मच जाने की वजह से एक बड़ी तादाद में खूबसूरत लड़कियाँ हरम में जाने लगी थीं और चारों तरफ परियों का मजमा रहने लगा था।' वैसे गाजीउद्दीन हैदर की प्रधान बेगम बहू बेगम थी। बादशाह उनके तेज स्वभाव से सदैव डरते थे। वह जब अपने हठ पर उतर आती थी तो अवध के बादशाह को भी झुकना पड़ता था।

वस्तुतः बहु-विवाह प्रथा के कारण विवाहिता स्त्रियां की स्थिति शोचनीय थी। मुस्लिम शासकों के हरम के विस्तार की कोई सीमा ही न थी। बहु-विवाह प्रथा में पत्नियों के मध्य ईर्ष्या, द्वेष की भावना भी पनपती थी, कारण किसी को अधिक महत्व दिया जाता था और किसी की उपेक्षा होती थी। ग्वालियर के राजा मानसिंह की आठ रानियाँ थीं। नवीं मृगनयनी थी, जो राई गांव की एक निर्धन किसान परिवार की थी। जिसके रूप गुण पर प्रसन्न होकर विवाह कर लाये थे। उसके लिए उन्होंने संगीत, पढ़ना-लिखना तथा महल के तौर-तरीके सीखने के लिए व्यवस्था की थी। उसके लिए अलग महल बनवाया था, जिसे देखकर अन्य रानियाँ ईर्ष्या करती थीं। यहाँ तक उनकी बड़ी रानी ने उसे पान में जहर डाल कर भेंट किया था, परन्तु मृगनयनी ने पान आदरपूर्वक ले लिया था, परन्तु खाया नहीं था।

साहित्य में बाल-विवाह और अनमेल-विवाह के उदाहरण भी मिलते हैं। जिसके कारण कम उम्र में ही स्त्रियों के विधवा हो जाने की स्थिति रहती थी। बाल-विवाह के कारण समाज में न जाने कितनी समस्यायें उत्पन्न हो जाती थीं। एक-एक राजा न जाने कितनी कम उम्र की कन्याओं से विवाह कर लेता था, परन्तु यदि कोई स्त्री असमय में ही विधवा हो जाये तो उसे पुनर्विवाह करने की अनुमति समाज नहीं देता था। विधवायें समाज एवं परिवार में उपेक्षित रहती थीं। वह किसी मांगलिक कार्य में हिस्सा नहीं ले सकती थीं और सादा जीवन व्यतीत करती थीं। राजघरानों की छोड़ कर सामान्य जन-जीवन में वैधव्य का जीवन नारी के लिए अभिशाप ही था।

साहित्य में कई स्थानों पर सती-प्रथा जैसी अमानवीय परम्परा का चित्रण मिलता है। अल्प आयु की कन्याओं का अधेड़ पुरुषों से जब विवाह कर दिया जाता था तो असमय में ही पति की मृत्यु हो जाने पर वैधव्य जीवन व्यतीत करना नारी-जीवन की नियति बन जाती थी। न जाने कितनी स्त्रियाँ समाज की उपेक्षा का शिकार बन कर इस अभिशाप को झेलती थीं। अहिल्याबाई भी कम उम्र में ही विधवा हो गयी थी। उनकी पुत्री मुक्ताबाई भी विधवा हो गयी थी, तब उन्होंने अहिल्याबाई के समक्ष सती होने का संकल्प प्रकट किया। इसका वर्णन इस प्रकार मिलता है- 'अहिल्याबाई की इच्छा नहीं थी कि पुत्री सती हो, परन्तु मुक्ताबाई का हठ देखकर सहम गई। महीदपुर परगने के माकरोन गाँव में डेढ़ सौ वर्ष पहले एक कुनबी स्त्री सती होना चाहती थी, राजपूत जमींदार ने निषेध किया तो सती ने शाप दे दिया, जिसके परिणामस्वरूप राजपूत नष्ट हो गये और माकरोन में कुनबी आ बसे। यह परम्परा अहिल्याबाई के कान में पड़ी। मुक्ताबाई सती हो गई।' महाभारत काल में भी सती प्रथा का उल्लेख मिलता है। राजा पाण्डु की द्वितीय पत्नी माद्री ने अपने पुत्र नकुल, सहदेव को कुन्ती को सौंपकर पति के साथ प्रयाण करने का संकल्प किया।'

उपन्यासों के अध्ययन करने पर यह तथ्य सामने आया है कि प्रत्येक काल में नारी के बलात्कार एवं शोषण की कहानी दोहरायी जाती रही है। यहाँ तक कि महाभारत काल में बलात्कार की घटनाओं का वर्णन आलोच्य साहित्य में मिलता है। 'देवकी' उपन्यास में पौराणिक आख्यान मिलता है, जिसके अनुसार- 'यादव गण राज्य के महानायक उग्रसेन जब पर्यटन पर गये तो उनकी सुन्दरांगी प्रिया महारानी सुशोभना भी साथ गयी। एक दिन वे प्रकृति की मनोहर छटा देखते हुए सखियों के साथ पर्वत के रमणीय स्थान पर पहुँच गयी। उसी समय सौभ विमान का स्वामी महाबली दानव द्रुमिल भी अचानक पर्वत की मादक सुषमा से आकर्षित होकर वहीं विमान से उतर पड़ा, उसने अनिंद्य सुन्दरी सुशोभना को अकेली पाकर महाराजा उग्रसेन का भ्रम उत्पन्न कर काम वासना के वशीभूत होकर समागम किया। जब सुशोभना को उसका छल ज्ञात हुआ तो वह क्रोधित होकर बोली, 'तूने छल से मेरे पति का भ्रम उत्पन्न करके मेरा पतिव्रत खंडित कर दिया। मूढ तेरे नीच कर्म से दूषित होने के कारण मुझे अपने बंधु-बांधवों का रोष और अपमान तो झेलना ही होगा, अपने पति के उत्तम कुल की ओर से सदा निंदित तथा तिरस्कृत होकर पूरा जीवन बिताना होगा।

नारी-समाज में कुरीतियाँ तथा अंधविश्वास इतने अधिक व्याप्त थे जिनसे उबर पाना कठिन था। अनेक समस्यायें इन्हीं अंधविश्वासों के कारण उत्पन्न हुयी थीं। आलोच्य साहित्य में स्थान-स्थान पर इनकी चर्चा मिलती है। अहिल्याबाई के शासन काल में समाज में अनेक कुरीतियाँ, रूढ़िवाद अंधविश्वास प्रचलित थे।

साहित्य का अध्ययन करने पर यह बात पूर्णतः स्पष्ट हो जाती है कि दासी-प्रथा का आम चलन था। शासक एवं धनिक वर्ग तो दासियाँ रखता ही था, आम नागरिक भी दासी अर्थात् सेविका रखते थे। ये दासियाँ कौन स्त्रियाँ बनती थीं, इस सम्बन्ध में अनेक स्थानों पर वर्णन मिलता है। इनमें कुछ दासियाँ क्रय करके लायी जाती थीं और कुछ विवाह के समय नववधू के साथ दहेज में आती थीं। कुछ अनाथ बालिकाओं को धन सम्पन्न लोग पालते-पोसते थे और उसके बदले में उन्हें दासी के रूप में आश्रय देते थे। कुछ पेशेवर लुटेरे लड़कियों को इधर-उधर से उड़ाकर शाही हरम, राजाओं के अन्तःपुर में लाकर बेच देते थे। वेश्याओं के कोठों पर भी लड़कियाँ क्रय की जाती थीं। जो सुन्दर, नृत्य-संगीत में निपुण हो जाती थीं, वह धंधे में लगा दी जाती थीं और बाकी को दासी कर्म करना पड़ता था।

साहित्य में चित्रित नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं में अवैध सम्बन्ध की समस्या भी विकराल थी। इसके लिए कहीं-कहीं नारी स्वयं उत्तरदायी थी और कहीं-कहीं उसे विवशता के कारण भी ऐसा करना पड़ता था। वैशाली की नगर-वधू' उपन्यास में इस प्रकार के अवैध सम्बन्धें और उससे उत्पन्न सन्तान की दुर्दशा का जो चित्र मिलता है, वह नारी जाति के जीवन की विडम्बना का साकार रूप है। उपन्यास में उसका विस्तृत वर्णन इस प्रकार मिलता है- मठाधीश गोविन्द स्वामी द्वारा पालित मातंगी और वर्षकार के बीच अनजाने में अवैध सम्बन्ध बन गये थे। जबकि वस्तुतः वे दोनों भाई बहन थे। मठाधीश ने उनका पालन-पोषण किया था और इस रहस्य को गुप्त रखा था। मरते समय उसने सम्राट प्रसेनजित से उनका विवाह उनकी इच्छानुसार करने का वचन मठाधीश ने लिया था। एक गुप्त पत्र दिया था जिसमें दोनों के जन्म की बात लिख दी थी और पत्र को उनके विवाह के समय खोलने का वचन लिया था, जिसमें उन दोनों के भाई बहन होने का रहस्य लिखा था। वर्षकार और मातंगी अनजाने में प्रेम सम्बन्ध में बँध गये। उधर राजकुमार बिम्बिसार ने भी असाधारण रूपवती मातंगी से अवैध सम्बन्ध स्थापित कर लिये। मातंगी गर्भवती हो गयी। उसने गुप्त रूप से अपने नवजात शिशु को कूड़े में फेंकवा दिया, जिसे राजगृह के महावैज्ञानिक सिद्ध शाम्बक्य कश्यप ने पाला। शीघ्र ही उन्हें पता चल गया कि यह आर्या मातंगी का पुत्र है। आगे चलकर मातंगी ने एक पुत्री को भी जन्म दिया, वह वर्षकार की सन्तान थी।

में नियोग प्रथा का जो वर्णन मिलता है उसमें राजा पाण्डु की विधवा रानियों को पुत्र प्राप्ति की इच्छा से अनैतिक सम्बन्ध बनाने के लिए राजमहिषी सत्यवती एवं भीष्म ने समर्थन किया और उसे शास्त्रोक्त सिद्ध करने का प्रयास किया। यद्यपि यह बलपूर्वक किया गया व्यभिचार ही था।

कभी राजनीतिक कुचक्रों एवं षड़यन्त्रों में स्त्रियों का उपयोग किया जाता था। यहाँ तक किसी राजा को मारने के लिए विषकन्या तैयार की जाती थी। विषकन्या बनाने के लिए स्त्री पर अमानुषिक अत्याचार किये जाते थे। 'वैशाली की नगर-वधू' उपन्यास में यह तथ्य सामने आया है।

इस प्रकार के न जाने कितने अत्याचार विवशतावश नारी को सहने पड़ते थे। शाही हरम और राजाओं के महलों में काम करने वाली दासियों, बाँदियों पर यदि ये राजे-महाराजे एवं नबाव, बादशाह प्रसन्न हो जायें तो लाखों वार देते थे और यदि किसी बात पर अप्रसन्न हो जायें तो नाक कान काट कर शहर से बाहर निकाल देने में तनिक भी देरी नहीं करते थे। जन सामान्य में भी स्त्रियों की पुरुषों पर आर्थिक निर्भरता आड़े आती थी। यदि वे तनिक भी उनकी इच्छा की अवहेलना करती तो मार-पीट करना पुरुषों का अधिकार था। बेगम हजरत महल को जब वह एक साधारण मुस्लिम परिवार में विवाह कर गयी थी तो उनके पति ने उन्हें मार-पीट कर घर से निकाल दिया था। बाहर गली में बैठी रो रही थी, तभी अम्मन जो परीखाना की कुटनी थी, उन्हें समझा-बुझाकर परीखाना में ले गयी थी।

शिक्षा का अभाव और आर्थिक परवशता स्त्री शिक्षा का अभाव प्राचीन काल में सर्वत्र दिखायी पड़ता है। आलोच्य रचनाओं में स्पष्ट रूप से स्त्री शिक्षा के लिए राज्य या समाज की ओर से कोई प्रयास नहीं दिखाई देता। राजघरानों में राजकन्याओं की शिक्षा यहाँ तक कि अस्त्र-शस्त्र चलाने की शिक्षा देने के तो उदाहरण मिलते हैं, परन्तु सर्व साधारण के लिए शिक्षा की परम्परा नहीं मिलती। कन्यायें घरों में ही अपने निकट सम्बन्धियों से घर-गृहस्थी में काम आने वाली कलायें जैसे सीना, पिरोना, रसोई बनाना, वस्त्र बुनना आदि सीखती थीं। हस्त कलायें परम्परागत रूप से स्त्रियों को आता था। उनका क्षेत्र घर की चहारदीवारी तक ही था।

वेश्या जीवन का एक दुखद पक्ष और भी था, यदि वह गर्भवती हो जाती थी तो उसकी सन्तान को पिता का नाम देने के लिए कोई तैयार न होता था। 'मस्तानी' उपन्यास में मस्तानी के जीवन की गाथा एवं संघर्ष की यही कहानी है। माधवी जब अपनी पुत्री का विवाह उच्च कुल में करने का हठ करती है तो वह भी यही कहती है- 'इस प्रकार उपरोक्त वर्णन से नारी-जीवन से जुड़ी हुयी जिन समस्याओं का वर्णन किया गया वे प्रत्येक युग में उसे सहनी पड़ी और आज भी कमोवेश बनी हुयी है। एक ओर धर्मग्रन्थों में उसे सम्मान दिया गया

और दूसरी ओर व्यवहारिक जीवन में उसे सदा अपमानित, प्रताड़ित किया जाता रहा। वह सदैव भोग-विलास की सामग्री ही समझी जाती रही। हाँ कतिपय स्त्री पात्रों ने इतिहास में अपना महत्वपूर्ण एवं गौरवमय प्राप्त किया।'

सन्दर्भग्रन्थ

1. वीर पुत्रों की माँ कुंती - श्री व्यथित हृदय दिनमान प्रकाशन, ३०१४, चर्खेवालन, दिल्ली-११०००६, संस्करण १९८९।
2. पांचाली - सुशील कुमार सामयिक प्रकाशन, ३३२०-२१, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२, संस्करण २००२।
3. देवकी - सुशील कुमार सामयिक प्रकाशन, ३३२०-२१, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२, संस्करण २००२।
4. रूकमणि - सुशील कुमार सामयिक प्रकाशन, ३३२०-२१, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२, संस्करण २००२।
5. सत्यवती - सुशील कुमार सामयिक प्रकाशन, ३३२०-२१, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२, संस्करण २००२।